साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

साहित्य औश्र पत्रकारिता का गहरा सम्बन्ध है। साहित्य में संवेदना मनफष्य को जिस परस्परता से जोड़ती है, उसका सूचना–संजाल मीडिया में आकर समाज औश्र राजनीति को मानवता के गहरे सरोकारों से जोड़ सकता है। पत्रकारिता से जुड़कर अनेक साहित्यकारों ने स्वाधीनता संघर्ष में अपनी गहरी भूमिका का निर्वाह किया।'' इस कथन के संदर्भ में अगर देखा जाए तो आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेन्दु और उनके मंडल के साहित्यकारों ने हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से जन–जागरण और राष्ट्रीय चेतना की जो लहर उठाई, उसका पूरा प्रभाव छायावाद युग के राष्ट्रीय–सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवि पं. माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता में दिखाई देता है।

यद्यति चतुर्वेदी जी महात्मा गॉधी से बहुत प्रभावित थे, फिर भी उनकी राष्ट्रीय चेतना उग्र भावों से युक्त थी और वे अंग्रेजों के अवसरवादी नीतियों के सख्त विरोधी थे। भारतीय राजनीति और आंदोलनों में गॉधी जी के सक्रिय भूमिका का प्रभाव, उस समय के हिंदी साहित्य के साथ–साथ हिंदी पत्रकारिता पर भी पर्याप्त पड़ा। उस युग के अधिकांश साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में देशप्रेम, राष्ट्रीयता, जन चेतना तथा गॉधीवादी आदर्शों के प्रचार–प्रसार की प्रेरणा ही प्रबल रही। इस संदर्भ में धर्मवीर भारती का यह कथन अवलोकनीय है – ''स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की परंपरा और परवान चढ़ती गई। वह चाहे क्रांतिकारी शस्त्र आंदोलन हो या गांधी जी का सत्याग्रह–ये अखबार उनके माध्यम से जन–जागरण के अग्रदूत थे। रोज जमानत मॉगी जाती थी, रोज–रोज पुलिस छापे मारती थी, संपादक का एक पॉव जेल में रहता था। संपादक और पत्रकार जनता के आदमी थे और भाषा के साथ हिंदी के साथ एक गहरी प्रतिबद्धता थी, अपनी मातृभाषा के गौरव से उद्दीप्त थी वह पत्रकारिता। तेजस्वी पत्रकारों की एक लम्बी परंपरा महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराडकर इत्यादि के रूप में कार्यरत थे और अखबार तब रोजगार से ज्यादा विचार का वाहक था।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा' का संपादन सन् 1913–1915 तक, 'प्रताप' का अक्टूबर, 1923 से मार्च 1924 तक विद्यार्थी जी के जेल जाने पर किया। चतुर्वेदी जी की पत्रकारिता का मुख्य केन्द्र साप्ताहिक 'कर्मवीर' ही था, जिसका संपादन उन्होंने 17 जनवरी 1920 से 11 जुलाई, 1959 तक किया। इसमें से उनकी जेल यात्रा का समय निकाल देने पर लगभग 35 वर्षों का लम्बा संपादकीय कार्यकाल रहा। माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली के 10 खण्डों में से 9 एवं 10 उनके 'कर्मवीर' के सम्पादकीय लेखों पर ही केन्द्रित है। 'कर्मवीर' के डिक्लेरेशन लेने के समय अंग्रेज मजिस्ट्रट के यह पूछने पर कि इस पत्र की क्या आवश्यकता है ? इस पर बड़ी निडरता के साथ चतुर्वेदी जी ने कहा कि 'आपका अंग्रेजी पत्र दब्बू है, मैं ऐसा पत्र निकालना चाहता हूँ जिससे ब्रिटिश शासन चलते–चलते रूक जाए।'

चतुर्वेदी जी की इस स्पष्टवादिता और प्रखर चेतना से ही 'कर्मवीर' के उद्देश्य का पता चल जाता है कि भारत औश्र वहां के आम जन के सुख–दुख से पूर्णतया प्रतिबद्ध पत्र है। इस संदर्भ में यह कथन महत्वपूर्ण है – ''कर्मवीर के संपादकीय अत्यंत प्रखर और निर्भीक हाते थे। स्वतंत्रता–संघर्ष का धधकता हुआ इतिहास अत्यंत प्रमाणिक रूप में कर्मवीर के पृष्ठों पर अंकित है। पत्रकारिता की महान शक्ति कर्मवीर के माध्यम से उजागर हुई थी। अनेक आंदोलनों में कर्मवीर ने नेतृत्व किया और अभूतपूर्व सफलताएं अर्जित की।

'कर्मवीर' का संबंध एक तरफ साहित्य, कला, समीक्षा तथा नवीन प्रतिभाओं को अवसर देने से था, तो दूसरी ओर वह भारत के गरीब, कमजोर, शोषितों की आचवाज और उनका पक्षधर था। 'कर्मवीर' की दृष्टि राष्ट्रीय राजनीति के साथ अंतर्राष्ट्रीयपटल पर भी बराबर बनी रही और साथ ही सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ी रही, जो उसकी संपादकी शीर्षकों जैसे – टर्की का भाग्य निर्णय, रूस की क्रान्ति, अफ्रीका रंगभेद, मजदूर और मजदूरी गॉधी और सत्याग्रह, स्त्रियों पर अत्याचार, रायबरेली हत्याकाण्ड, बजट या दिवाला, हण्टर कमेट की नियत, प्रेस एक्ट का कुचक्र आदि से स्पष्ट हो जाता है। 'कर्मवीर' का पहला अग्रलेख जो 'हम' शीर्षक से 17 जनवरी 1920 को प्रकाशित हुआ, इसके तुरन्त बाद ही पं. माखनलाल चतुर्वेदी को गिरफ्तार कर लिया जाता है। इस संपादकीय की कुछ पंक्तियॉ द्रष्टव्य है – 'राजनीति में या समाज में, साहित्य में या धर्म में जहां भी स्वतंत्रता का पथ रोका जायेगा, ठोकर मारने वालों का पहिला प्रहार और घातक के शस्त्र का पहिला वार आदर से लेकर मुक्त होने के लिए प्रस्तुत रहेंगे। दासता से हमारा मतभेद रहेगा। चाहे वह शरीर की हो या मन की, व्यक्तियों की हो या परिस्थितियों की दोषियों की या निर्दोषियों की, शासकों की हो या शासितों की।

गॉधी जी और उनके सिद्धंतों को रोकने के लिए ब्रिटिश शासन ने अनेक प्रयास किए और उनके विरुद्ध दुष्प्रचार भी किए किन्तु सफल न हो सके। इस भ्रमात्मक स्थिति को दूर कर, लोगों में सत्याग्रह के प्रति प्रबल विश्वास को बनाए रखने के लिए चतुर्वेदी जी ने 'कर्मवीर' में 24 जनवरी 1920 को 'महात्मा गांधी और सत्याग्रह' शीर्षक संपादकीय में लिखा – ''कहा जाता है सत्याग्रह से विद्रोह पैदा होता है, किन्तु आज तक ऐसा कोई प्रमाण कहने वालों के पास नहीं। सत्याग्रह ने भारत में विरोधी भावों को हटाया है। तब यह दोष मिथ्या है। सच बात तो यह है कि वर्तमान गड़बड़ के जिम्मेवार अत्याचारी शासकों को दोष–मुक्त दिखाने की सारी तैयारियॉ है। नहीं तो, नेताओं के पकड़े जाने पर, देश से निकाले जाने और दंड दिये जाने परउन देशों में अत्याचार का बदला चुकाने के लिए प्रयत्न हुए हैं, जहां 'गांधी' नाम ही हवा भी न पहुंची हो। गॉधी जी और उनके सिद्धांतों में चतुर्वेदी जी की अटूट निष्ठा थी और वे मानते थे कि उसी मार्ग का अनुसार करके ही स्वाधीनता प्राप्त की जा सकती है। गॉधी जी की विचारों को जन–जन तक पहुंचाकर और लोगों को जागरूक करके ही स्वाधीनता आंदोलन को सफल बनाया जा सकता था, इस हेतु माखनलाल चतुर्वेदी अहिंसा और असयोग पर बल देते हुए 'देश की स्वाधीनता की तैयारी' शीर्षक में लिखते हैं – ''अगर हमारे बलिदान से दुनिया में भूकम्प हो उठे तब भी बलि होना न रोका जाय, अहिंसापूर्वक वह जारी रखा जाये हम कष्टों से खाली दुनिया का डॉवाडोल हो, उतना ही नहीं अपनी कौम की अमरता चाहते हैं और चाहते हैं प्यारे मुल्क का स्वराज्य। मुल्क की मांग है मेरी बेड़ियां असहयोग तोड़ेगा, असयोग करो।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी की प्रखर बलिदानी स्वर भारत की पीड़िता–शोषित जनता की मूक वेदना के साथ, उनके हक में तथा शोषक प्रधान व्यवस्था के विरोध में उठता है। एक

तरू भारत के गरीब मजदूर–किसान अपनी मेहनत और हक को पाने के लिए प्रयासरत है तो दूसरी तरफ उनके हक को मारकर अपनी सुख सुविधाओं को बढ़ाने वाला शासक वर्ग है। ऐसे शासक वर्ग को चेतावनी देते हुए चतुर्वेदी जी 22 मई, 1920 के 'कर्मवीर' में लिखते हैं – ''हमारे देश में इस समय उत्तर–पश्चिम रेवले के कर्मचारियों, अहमदाबाद के मिलवालो, मद्रास के तेल कारखानों में काम करने वालों और ब्यावर (राजपूताना) केमिल कर्मचारियों ने अपने–अपने काम छोड़ रखे हैं। सम्पत्ति के यथोचित विभाग का प्रश्न है। मजदूर चाहते हैं भर–पेट भोजन मिले, पूँजीवाले अपने ऐशो–आराम में कमी करना पसंद नहीं करते। कटुता दिन–दिन बढ़ती जा रही है, ऐसे समय में देश के पूँजीवालों और कारखाने वालों बड़े विचार से काम करना चाहिए। लोकसत्ता के सामने जारसाही तक कुछ न चली। जहां तक राजनीति में भेदभाव का हम तिरस्कार करते हैं मनुष्य समाज की श्रेणी का विभिन्नता का भी हम तिरस्कार करते हैं। पूँजीवाले यदि जल्द रास्ते पे न आये, तो देश में उलझनें बढ़ जायेंगी।'

जनरल डायर द्वारा कराए नृशंस जलियावाला हत्याकाण्ड के बाद, देशभर में विद्रोह की स्थिति को देखते हुए अंग्रेज सरकार ने भारतीयों का सिर्फ बरगलाने के लिए जांच हेतु हण्टर कमेटी का गठन किया। प्रबुद्ध भारतीयों के सोच के अनुसार की हण्टर कमेटर ने अपनी झूठी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें घटित घटना पर सिर्फ अफसोस जाहिर करते हुए, अपराधी अंग्रेज अधिकारियों को बचाया गया। जांच कमेटी के इस झूठे स्वांग पर रोषपूर्ण तीखी प्रतिक्रिया देते हुए चतुर्वेदी जी 2 अक्टूबर, 1920 को 'कर्मवीर' में 'आप न्याय चाहते थे न? यह लीजिए' शीर्षक से लिखते हैं – ''एक तरफ पंजाब भर के नेताओं को काला पानी जेल और फॉसी की सजा दी जाती है और हजारों तड़पाये और भून डाले जाते हैं और दूसरी तरफ? हजारों का नाश कर डालने पर भी नौकरशाही के केवल 20 आदमी अपराधी माने जाते हैं। पर क्या इन अपराधियों को भी जेल, फॉसी या काला पानी की सजा होगी ? क्या इन पर भी कोड़े पड़ेगें और क्या ये भी पेट के बल रेंगने के लिए लाचार होंगे?..... इंसाफहो गया और उस इंसाफ ने दिखाया कि चाहे हजारों भारतवासी भून डाले जाएं परन्तु कर्नल ओब्रायन, मि. मार्सडन, मि. जेकब, जनरल केम्पबेल, कर्नल डाबटन, कर्नल मकरे इन्हें केवल सूचित किया गया है कि अपने जो कार्य पंजाब में किया, उसे सरकार नापसंद करती है। ओह! कितना बड़ा दंड है।

जलियावाला बाग हत्याकाण्ड के बाद भारतीयों की प्रतिक्रिया से आक्रांत अंग्रेज अपनी शासन–व्यवस्था को हिलने से बचाने के लिए, सैकड़ों वर्षों से एक साथ एक समन्वित संस्कृति के रूप में रहने वाले हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदायों में विद्वेष फैलाने की अपनी घृणित नीति को अंजाम देने में लगी थी। धर्म की आड़ में 'फूट डालो राज करो' की नीति को चिंगारी के रूप में गोरक्षा से जोड़कर कुछ उन्मत्त युवाओं को आगे कर अंग्रेजी शासन अपना हाथ सेंकना चाहती है, इस घृणित सत्य को समझकर ही चतुर्वेदी जी ने दोनों कौमों को विवेक से काम लेने और अंग्रेजों की दूषित मनोवृत्ति को समझने का आग्रह करते हुए 12 फरवरी 1921 के 'कर्मवीर' में लिखा– ''जि गोरक्षा के सवाल को हाथों में लेकर तूफान उठाने की कोशिश की जाती है, वह सवाल अकेले हिन्दुओं का नहीं, मुसलमानों का भी है। मुसलमान भाई भी देश में खेती करते हैं, उनके बाल–बच्चों के लिए दूध 'विलयत' से डिब्बों में भरकर नहीं आता। फौज के अंग्रेजों के पेट के लिए हजारों गायों के मारे जाने पर कौन हिन्दू ऐसा होगा जो मुसलमान से गौ–हत्या के लिए लड़ने के लिए तैयार होगा? इन दोनों बड़ी कौमों को इस वक्त बहुत सोच समझकर काम करना चाहिए। मुसलमान और हिन्दू सबसे पहले हिन्दुस्तानी हैं, इस बात को भूल नहीं जाना चाहिए।

'कर्मवीर' की सम्पादकीय टिप्पणियों को पढ़कर मन में वही अनुभूतियां जाग्रत होती हैं, जो पं. माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय–बलिदानी चेतना से ओतप्रोत कविताओं को पढ़कर। पत्रकार के रूप में उनका लेखन अत्यंत प्रखर, अंग्रेजी सरकार के अवसरवादी और समझौतेवादी नीति से बिल्कुल विरुद्ध था। उन्होंने बड़ी ही निडरता और स्पष्टवादिता से ब्रिटिश साम्राज्य की ढुलमुल औश्र दमनात्मक नीतियों को भारतीय जनता के सामने खोलकर रख दिया, जिसकी वजह से उनको जेल यात्राएं भी करनी पड़ी, किन्तु 'कर्मवीर' के माध्यम से राष्ट्रप्रेम और जन–मानस में राष्ट्रीय चेतना का बिगुल फूॅकना कभी बंद नहीं हुआ। 'कर्मवीर' में लिखे उनके सम्पादकीय और लेखों ने देश के हजारों युवाओं में स्वाधीनता के प्रति ऐसा जोश पैदा किया, जिसे भुलाया नहीं जा सकता। अंत में डॉ. विनय मोहन शर्मा का यह कथन अत्यंत ही प्रसंगिक प्रतीत होता है – ''कर्मवीर ही वह पत्र था, जिसने रतौना–कसाईघर के विरोध में आवाज उठाई और जनतम एकत्रित किया। ऐसे अनेक आंदोलन कर्मवीर ने छेड़े और वह उनमें सफल भी हुआ। 'कर्मवीर' ने ऐसे परिस्थितियों में काम किया जब 'स्वराज्य' उच्चरित करना अपराध था।. .....पत्रकारिता में चतुर्वेदी जी ने म.प्र. में परंपरा कायम की है और वे श्री अंबिका प्रसाद वाजपेई, स्व0 गणेश शंकर विद्यार्थी और स्व. पड़ारकर जी की श्रंखला की गौरवमयी कड़ी है।

संदर्भ

- मिश्र, डॉ. राकेश शर्मा, पत्रकारिता प्रशिक्षण (भूमिका) नई दिल्लीःतक्षशिला प्रकाशन।
- वर्मा डॉ. मृदुला हिन्दी की सर्वोदय पत्रकारिता, कानपुरःविद्या प्रकाशन।
- जोशी, श्रीकान्त, संपा, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली (प्राक्कथन) खण्ड–9
- हिन्दी साहित्य का वस्तुपरक इतिहास–डॉ. रामप्रसाद मिश्र पृष्ठ सं0 55
- हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य राम चन्द्र शुक्ल पृष्ठ सं0 154
- वही, पृ.–154
- वही, पृ.–138
- वही, पृ.–184–186
- वही, पृ.–12
- वही, पृ.–12

Copyright © 2014, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.